

**Godrej agrovet**  
brighter farming

CROP PROTECTION BUSINESS



## DOUBLE



पोलन पावर के साथ

# फूल सजेंगे समृद्धि के...

अब  
नए पैक में



मात्रा :  
900 मिलि  
प्रति एकड़



ज़्यादा उपज



अधिक गुणवत्ता



अधिक मुनाफा

बारिश से काफी नुकसान... निराश न हों किसान

# बाढ़ से जब फसलें नष्ट हो गईं, तब भी किसान के सामने कई विकल्प, उन्हें आजमाने से भारी नुकसान की काफी भरपाई संभव

पंजाब में जब किसान बुवाई-रोपाई कर राहत की सांस ले रहे थे, तब बारिश-बाढ़ के रूप में पहाड़ों से उपजी भयंकर प्राकृतिक आपदा ने यहां के 14 जिलों फिरोज़पुर, फतेहगढ़ साहिब, फरीदकोट, होशियारपुर, रूपनगर, फरीदकोट, होशियारपुर, रूपनगर, तरनतारन, लुधियाना, पटियाला, जालंधर, पठानकोट, मोगा, मोहाली, संगरूर और कपूरथला में हिस्सों में खेत-खलिहानों को चौपट कर दिया। ऐसी स्थिति में निराश किसानों के सामने सबसे बड़ी चुनौती होगी कि खेतों में पानी सूख जाने के बाद अब बचे सीजन में क्या बीजें? कौन सी खेती करें? उन्हें हौसला छोड़ने की जरूरत नहीं है। उसके सामने अब भी कई विकल्प शेष हैं, उन्हें आजमाने से भारी नुकसान की काफी भरपाई संभव हो सकती है।

हम आपके लिए लुधियाना स्थित पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पी.ए.यू.) के वैज्ञानिकों और मुक्तसर के कृषि अधिकारियों व प्रगतिशील किसानों के सहयोग से कई विकल्प लेकर आए हैं। वे कम समय में पकने वाली धान या बासमती, दालें, सब्जियों की खेती कर सकते हैं, ताकि खेत खाली ना रहें और उत्पादन भी हो सके, साथ ही अगले फसल-चक्र पर भी प्रभाव ना पड़े।

## पहला विकल्प – कम समय में पकने वाली फसलें उगाएं

पी.आर.-126 पूसा बासमती-1509 का है समय। पी.ए.यू. के एग्रोनॉमी विभाग के प्रमुख डॉ. एम.एस. भुल्लर सुझाते हैं कि बाढ़ का पानी आने के कारण नुकसान हुआ है और अब समय भी कम है। ऐसे में कम

समय में पकने वाली धान, बासमती या दालों की किस्में लगाने का सुझाव है। अगर किसान धान की खेती करना चाहते हैं, तो वे कम समय में पकने वाली किस्म पी.आर.-126



और बासमती की किस्म पूसा बासमती-1509 लगा सकते हैं। पी.आर.-126 और बासमती की किस्म पूसा बासमती-1509 लगा सकते हैं। पी.आर.-126 (123-125 दिनों में पकने वाली), जबकि पूसा बासमती-1509 (120 दिनों में पकने वाली) किस्में हैं। जिन इलाकों में मूंग लग सकती है या मांहा की खेती होती है, वहां ये दालें भी लगाई जा सकती हैं। पठानकोट और गुरदासपुर में तिल लगते हैं, उनकी भी बुवाई कर सकते हैं। अभी चारे की फसल का भी नुकसान हुआ है। चारे की फसलें दो महीने में तैयार हो जाती हैं, उन्हें दोबारा लगाया जा सकता है। जहां पानी कम हो गया है और फसल आगे बढ़ने की संभावना दिख रही है, वहां यूरिया डाला जा सकता है।

खेत खाली रखने के बजाय ये किस्में लगाई जा सकती हैं। वहीं, कृषि अफसरों के अनुसार, बासमती की किस्में 1692, 1847 एवं 1885 की भी पनीरी तैयार कर सकते हैं और उसे

10 से 15 अगस्त के बीच खेतों में रोप दें। अगर किसान पनीरी बीज कर 15 अगस्त से पहले रोपाई कर देते हैं, तो उनका करीब 15 नवम्बर तक धान की कटाई के बाद खेत खाली हो जाएगा।

## दूसरा विकल्प – पहले खेतों से पानी निकालें, फिर सब्जियों की बुवाई करें

पी.ए.यू. के सब्जी विज्ञान विभाग के प्रमुख डॉ. तरसेम सिंह ढिल्लों सुझाव देते हैं कि इस समय में खेतों में जो सब्जी की फसलें खड़ी हैं, उन्हें बचाने के लिए सबसे पहले किसानों को खेतों में जमा ज्यादा पानी को बाहर निकालना सबसे जरूरी है। तत्पश्चात्, वे भिंडी, लोकी, करेला, तोरी की बुवाई कर

सकते हैं। बारिश के सीजन के टमाटर और बैंगन की नर्सरी तैयार कर सकते हैं। बैंगन की फसल खेत में भी बुवाई कर सकते हैं। इस समय के दौरान किसान जुलाई के अंतिम सप्ताह तक या अगस्त में इनकी बुवाई खत्म कर सकते हैं।

## तीसरा विकल्प – मटर, गोभी व आलू भी लगा सकते हैं

जानकारों के अनुसार, जिन खेतों में 15 अगस्त या उसके बाद बाढ़ का पानी निकलेगा, उनके किसान सितम्बर में अपने खेतों में अगोती गोभी, मटर व आलू की फसल लगा सकते हैं। ये सभी फसलें 15 सितम्बर के करीब लगाई जा सकती हैं। ये करीब दो माह का समय लेती हैं। इस तरह 15 नवम्बर तक खेत खाली हो जाएगा और किसान तक गोहूँ की बुवाई कर सकते हैं।

## चौथा विकल्प – पकावी, चारे वाली मक्की

किसान पकावी मक्की एवं चारे वाली मक्की बीज सकते हैं। पकावी मक्की पकने में 100 दिन लेती है और उसका झाड़ करीब 25 क्विंटल होता है। यह 1800 से 2000 रुपए प्रति क्विंटल की दर से बिकती है। इसकी किस्में सिंजेटा की 7750, पायोनियर की 3378 रुपए और 3396, बायर की बी. के.सी.-9644 किस्में हैं। इसके अतिरिक्त किसान चारे वाली मक्की भी बीज सकते हैं, जो 60 दिन में तैयार हो जाती है और करीब 200 क्विंटल प्रति एकड़ झाड़ दे देती है। यह 150 से 300 रुपए प्रति क्विंटल तक बिक जाती है।

उद्यान लगाने से पूर्व उचित स्थान का चुनाव पौधों का चयन रोपण का समय एवं रोपण विधि की जानकारी होना अति आवश्यक है।

### स्थान का चुनाव :

1. उष्ण, उपोष्ण एवं सम-शीतोष्ण जलवायु के अनुसार फल वृक्षों का चुनाव करें।
2. चयनित स्थान की मिट्टी एवं पानी की जांच अवश्य करवाएं।
3. मृदा उद्यान का आधार है। अतः दोमट तथा बलुई मिट्टी का चुनाव करें।

4. धरातल समतल होना चाहिए।
5. भूमि में 2 मीटर की गहराई तक कोई कठोर तथा कंकरीली तह नहीं होनी चाहिए।

6. सिंचाई तथा जल विकास का उचित प्रबन्ध होना चाहिए।

7. कीट एवं बीमारियों से रहित स्थान का चुनाव करें।

8. बाजार एवं यातायात की समुचित व्यवस्था हो।

9. जंगल तथा ईट के भट्टों के पास के स्थान का चुनाव न करें।

10. उद्यान कार्यों के लिये सस्ते तथा निपुण मजदूर जहां पर उपलब्ध हो।

### फल वृक्षों का चयन

1. जलवायु, मिट्टी का पोषण स्तर, पी.एच. मान पानी की गुणवत्ता एवं सिंचाई तथा जल निकास आदि का ध्यान रखते हुये पौधों का चयन करें।

2. हमेशा कलमी पौधे ही किसी विश्वसनीय व प्रमाणित नर्सरी से खरीदें।

3. पौधे कीट एवं बीमारियों से मुक्त होने चाहिये।

4. पौधे नर्सरी से मिट्टी की पिण्डी सहित निकाले गए हो ताकि

डॉ. प्रमोद कुमार  
(बागवानी विशेषज्ञ)  
कृषि विज्ञान,  
रामपुरा-रेवाड़ी  
(हरियाणा)

## बाग लगाने की वैज्ञानिक विधि

यातायात में कम से कम नष्ट हो।

5. कलमी पौधों का रुट स्टोक भूमि तथा विषम परिस्थितियों के अनुरूप हों तथा बीज द्वारा तैयार किया गया हो।

**रोपण समय :** उष्ण तथा उपोष्ण पौधों को बरसात में जुलाई से सितम्बर तक लगाते हैं। बसंत ऋतु में भी रोपण किया जा सकता लेकिन अधिक देख-रेख की आवश्यकता होती है। समशीतोष्ण फल-वृक्षों का रोपण दिसम्बर से फरवरी तक करना अच्छा समझा जाता है पौध-रोपण हमेशा सायंकाल करें।

### रोपण विधि :

1. सर्वप्रथम चयनित स्थान की सफाई एवं पौधों के उचित विकास के लिये आवश्यक रेखांकन विधि का चुनाव करें।

2. उद्यान स्थापना 1-2 माह पूर्व 1x1x1 मीटर आकार के गड्डे पौधों के लिये आवश्यक दूरी के अनुसार खोदें।

3. एक माह तक गड्डे खुदे रहने के बाद 50 किलो गोबर की खाद तथा आवश्यकतानुसार उर्वरक मिट्टी मिलाकर भूमि की सतह से कुछ उंचाई तक भरते हैं, ताकि सिंचाई के बाद समतल हो जायें।

4. दीमक के बचाव के लिए क्लोरोपाइरीफॉस 25 एम.एल. मात्रा प्रति गड्डा मिलायें।

5. गड्डे की खुदाई के समय 1/2 मीटर गहराई तक की मिट्टी एक तरफ तथा निचली 1/2 मीटर गहराई की मिट्टी दूसरी तरफ डालते हैं तथा भरते समय उपर की मिट्टी नीचे तथा नीचे वाली मिट्टी खाद मिलाकर उपर भर देते हैं।

6. उद्यान के पश्चिम तथा उत्तर दिशा में लू तथा शीत लहर से बचाव के लिए वायुरोधक पौधों का रोपण करें।

7. रोपण के समय पौधे की पिण्डी को अच्छी तरह दबाकर सिंचाई करें।

8. पौधों को मिट्टी की पिण्डी से थोड़ा अधिक गाढ़ना चाहिए।

9. अच्छे परागण के लिए परागणकर्ता पौधों का भी रोपण करें।

10. रोपण के बाद तुरन्त सिंचाई करें तथा कुछ समय बाद नियमित आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

11. पौधों को विश्वसनीय, रजिस्टर्ड तथा स्थानीय नर्सरी से ही खरीदें।

12. नर्सरी का भ्रमण करके पहले पौधों की प्रजातियों की जानकारी करें, उसके बाद उपयुक्त प्रजाति का चुनाव करें। पहले कभी प्रजाति का नाम स्वयं न बताएं।

13. अच्छी किस्म के अधिक पैदावार देने वाले कलमी पौधों का चुनाव स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप करें तथा पौधों को पहले से बुक करवाएं।

14. नर्सरी में लम्बे समय से रखे गए अधिक उम्र के कलमी पौधों को कदापि न खरीदें।

15. नर्सरी से तुरन्त निकाले गए तथा जड़ कटे हुए पौधों को कभी नहीं खरीदना चाहिए।

16. कलमी पौधों की शाख की उम्र 1-2 वर्ष से अधिक न हो तथा बढ़वार अवरुद्ध न हुई हो।

17. मूलवृन्त तथा शाख का जोड़ स्पष्ट तथा अधिक उंचाई पर न हो।

18. वानस्पतिक विधियों द्वारा पौधें तैयार करने की तकनीकी जानकारी होनी चाहिये ताकि पौधों का कलमी रूप पहचानने में आसानी रहे।

19. कीट एवं बीमारियों से मुक्त शक्तिशाली एवं पॉलीथिन बैग में तैयार पौधों को वरीयता दें।

20. नर्सरी से पौधों को उठाने के 1-2 दिन पहले सिंचाई करें तथा सदाबहारी पौधों की कुछ पत्तियां तोड़ कर वाष्पोत्सर्जन को नियंत्रित कर सकते हैं।

21. सदाबहारी पौधों की मिट्टी के गोले के साथ तथा पर्णपाती पौधों को सुषुप्त काल में किसी तरह निकाला जा सकता है।

22. मिट्टी (अर्थ बॉल) का गोला अच्छी तरह घास, मूज या कांस में बंधा होना चाहिये।

23. यातायात के समय पौधों को टोकरियों में या सीधे लादकर लायें।

24. वाहन में पौधों को लादते समय सुरक्षित रखते हुए अर्थ बॉल को न टूटने दें।

25. अगर रास्ता लंबा हो तो ट्रक आदि पर रखे गए पौधों को बीच में पानी दें तथा दिन के समय तेज धूप में छाया कर सकते हैं।

डॉ. रघुबीर सिंह कालीरामणां, खण्ड कृषि अधिकारी, बरवाला (हिसार), कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, पंचकूला (हरियाणा)

# धान के कीटों व बीमारियों की पहचान एवं रोकथाम के उपाय कैसे करें?



## धान के कीटों की रोकथाम हेतु ध्यान देने योग्य बातें

अलग-अलग कीटों की रोकथाम हेतु किसान भाई निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें तो कीटों के प्रकोप को कम करने में सहायता मिलेगी :

1. गर्मियों में खेत की गहरी जुताई करें और मेड़ों पर घास खड़ी ना रहने दें।
2. रोपाई से पहले खरपतवार के पौधों को काट कर नष्ट कर दें।
3. नाइट्रोजन उर्वरकों का अत्याधिक प्रयोग ना करें तथा खाद को संतुलित मात्रा में प्रयोग लाएं।
4. खरपतवारों को नियंत्रित करते रहें।
5. खेतों में लागतार पानी खड़ा ना रखें और पानी सूखने के बाद ही दोबारा सिंचाई करें।
6. धान के खेत में कीटों की निगरानी लगातार करें तथा लाइट ट्रैप का प्रयोग करें।
7. फसल पर कीटों की निगरानी करते रहें और आर्थिक स्तर से अधिक संख्या होने पर कीटनाशकों का प्रयोग सही मात्रा में ही करें, अधिक मात्रा में प्रयोग करने से कोई लाभ नहीं मिलता।
8. कीटों के प्राकृतिक शत्रुओं जैसे मकड़ियों का संरक्षण करें और जहां इनकी संख्या ज्यादा हो, वहां कीटनाशक छिड़काव ना करें।
9. दानेदार कीटनाशक मित्र कीटों को अपेक्षाकृत कम नुकसान पहुंचाते हैं।

**1. पौध फुदके (तेला) :** पौधफुदके भूरे, काले और सफेद रंग के छोटे-छोटे कीट होते हैं, जिनके शिशु एवं वयस्क दोनों ही पौधों के तने और पत्तियों से रस चूस कर



फसल को हानि पहुंचाते हैं।

**रोकथाम :** (1) फसल पर इस कीट की निगरानी बहुत जरूरी है, क्योंकि फुदके तने पर होते हैं और पत्तों पर नहीं दिखते।

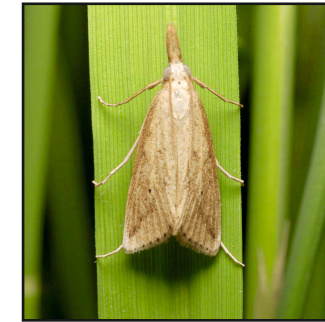
(2) कीट की निगरानी के लिए लाइट ट्रैप का प्रयोग भी किया जा सकता है।

(3) अधिक प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 70 मिलीलीटर प्रति 200 लीटर पानी या थायोमिथोकजम 25 डब्ल्यू.पी. 40 ग्राम प्रति 200 लीटर या कार्बोरिल 50 डब्ल्यू.पी. 400 ग्राम प्रति 200 लीटर या बुप्रोफेज़िन 25 एस.सी. 200

मिलीलीटर प्रति 200 लीटर पानी का छिड़काव करें।

(4) दानेदार कीटनाशक जैसे कार्बोफ्यूरोन 3जी 10 किलोग्राम प्रति एकड़ या फिप्रोनिल 0.3जी 10 किलोग्राम प्रति एकड़ भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

**2. तना छेदक :** तना छेदक की केवल सुंडियां ही फसल को हानि पहुंचाती हैं और वयस्क पतंगे फूलों के रस से काम चला लेते हैं। बाली आने से पहले उपरोक्त कीट के हानि



के लक्षणों को 'डेड-हार्ट' एवं बाली आने के बाद 'सफेद बाली' के नाम से जानते हैं।

**रोकथाम :** (1) लाइट ट्रैप के उपयोग से तना छेदक की संख्या पर निगरानी रखें। निगरानी के लिए फेरोमोन

प्रपंच 2 प्रति एकड़ पीला तना छेदक के लिए लगाएं।

(2) धान की रोपाई के 30 दिन बाद ट्राइकोग्रामा जैपोनिकम (ट्राइकोकार्ड) 40000 से 60000 प्रति एकड़ प्रति सप्ताह की दर से 2 से 6 सप्ताह तक छोड़ें।

(3) अधिक प्रकोप होने पर दानेदार कीटनाशक जैसे कार्बोफ्यूरोन 3जी या कारटॉप हाइड्रोक्लोराइड 4जी या फिप्रोनिल 0.3जी 10 किलोग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें या क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. 2 मिलीलीटर प्रति लीटर या क्विनलफॉस 25 ई.सी. 400 मिलीलीटर प्रति 200 लीटर या कारटॉप हाइड्रोक्लोराइड 50 एस.पी. 200 मिलीलीटर प्रति 200 लीटर का छिड़काव करें।

**3. पत्ता लपेटक :** इस कीट की भी केवल सुंडियां ही फसल को हानि पहुंचाती हैं, जबकि वयस्क पतंगे फूलों के रस पर जिंदा रहते हैं। सुंडी पत्तों के दोनों किनारों को सिल कर इनके हरे पदार्थ को खा जाती है। अधिक प्रकोप की अवस्था में फसल झुलसी नजर आती है।

**रोकथाम :** (1) लाइट ट्रैप के प्रयोग से कीट की निगरानी करें।

शेष पृष्ठ 7 पर



50 Years of Cultivating Prosperity

# के-मैक्स एनर्जी

## जब आधार ही मजबूत

## तो पैदावार ही

## भरपूर



सैल्यूट करें हर कोई



### के मैक्स एनर्जी के प्रयोग के फायदे

- ❖ मिट्टी स्वास्थ्य में सुधार
- ❖ पौषक तत्व के अवशोषण में वृद्धि
- ❖ जड़ों की सतह में वृद्धि
- ❖ वानस्पतिक विकास अधिक एवं अधिक फुटाव
- ❖ अजैविक तनाव सहनशीलता में वृद्धि
- ❖ अधिकतम एवं गुणवत्ता पूर्ण पैदावार

के मैक्स नोलेज सेंटर 1800-572-5065

प्रयोग मात्रा  
4 किलो  
प्रति एकड़



JPT® अल्टीमेट परफॉरमेंस तकनीक द्वारा तैयार

KRISHI RASAYAN EXPORTS PVT. LTD.

Technology from ALGAENERGY Spain

# खेती दुनिया

## KHETI DUNIYAN

### मुख्य कार्यालय

के.डी. कॉम्प्लैक्स, गऊशाला रोड, नजदीक शोरे  
पंजाब मार्केट, पटियाला - 147001 (पंजाब)

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

E-mail : kdpublishations@yahoo.co.in

वर्ष : 07 अंक : 29

तिथि : 22-07-2023

सम्पादक

जगप्रीत सिंह

मुख्य शाखाएं

पटियाला

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

मुम्बई

दिल्ली

लुधियाना

बण्डा

सम्पादकीय बोर्ड

डॉ. डी.डी. नारंग

डॉ. जे.एस. डाल

डॉ. आर.एम. फुलझेले

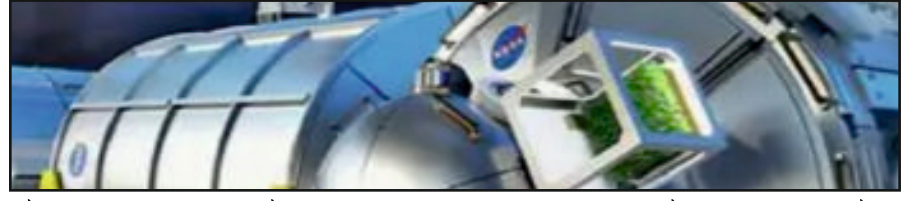
कम्पोजिंग

एक्ता कम्प्यूटरज़ पटियाला

Editor, Printer & Publisher JAGPREET SINGH  
Printed at Vargenia Printers, Sher-e-Punjab  
Market, Gaushala Road, PATIALA &  
Published at Patiala for Prop. JAGPREET SINGH

## खाद्य संकट का हल, नासा अंतरिक्ष में ऐसे बीज बना रहा, जिन पर मौसम का असर नहीं होगा

दुनियाभर के वैज्ञानिक ऐसे बीज तैयार करने की दिशा में काम कर रहे हैं, जिससे धरती पर जलवायु परिवर्तन का अन्न उत्पादन पर कोई असर नहीं होगा। उपज भी ज्यादा होगी और बड़ी जनसंख्या के लिए अनाज उपलब्ध करवाया जा सकेगा। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के सहयोग से 2022 में अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आई.ए.ई.ए.)



और यू.एन. का खाद्य और कृषि संगठन (एफ.ए.ओ.) ने ज्वार के बीज अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर भेजे थे, जहां पर इन बीजों को उगाया गया और उनसे बीज हासिल

किए गए।

अंतरिक्ष स्टेशन पर उगाए गए बीज अप्रैल में धरती पर वापस लाए गए थे और उनमें हुए जैनेटिक समेत अन्य बदलावों पर स्टडी की जा

रही है। इन पर खराब मौसम का असर नहीं होगा। ऐसा प्रयोग चीन 1980 के दशक में कर चुका है। ये प्रयोग काफी हद तक कामयाब रहे हैं।

----- गिरता जल स्तर -----

## बारिश और बाढ़ के पानी का संरक्षण हो

सरकार द्वारा मतदाताओं को खुश और तुष्ट करने के लिए निरर्थक योजनाओं पर बहुत सारा पैसा खर्च किया जाता है। यदि वर्षा-संचयन प्रणाली, धरती में बोरिंग, सामान्य भूमि में कुएं और तालाब खोदने आदि की मदद से इस अतिरिक्त पानी को वापस धरती में डालने के लिए परियोजनाएं शुरू की जाएं, तो जल स्तर को बढ़ाया जा सकता है और बाढ़-आपदाओं की तीव्रता को कम किया जा सकता है, यदि टाला न जा सके।

यदि अत्याधिक वर्षा होती है (हमें सूखे की स्थिति का भी सामना करना पड़ता है), तो कभी-कभी यह विनाश और बाढ़ का कारण बनती है। विभिन्न लंबालंब बांधों से भारी मात्रा में पानी छोड़ना पड़ता है। यह सारा पानी या तो बर्बाद हो जाता है या फिर समुद्र में चला जाता है, जिसका स्तर पहले से ही काफी ऊंचा

प्रणाली, धरती में बोरिंग, सामान्य भूमि में कुएं और तालाब खोदने आदि की मदद से इस अतिरिक्त पानी को वापस धरती में डालने के लिए परियोजनाएं शुरू की जाएं, तो जल स्तर को बढ़ाया जा सकता है और बाढ़-आपदाओं की तीव्रता को कम किया जा सकता है, यदि टाला न जा सके। इन सब के लिए ज्यादा धन की आवश्यकता

एस. के. मित्तल

नहीं आए। अब, जब हम पानी कम उपभोग करने और बचाने की बात करते हैं, तो कोई ध्यान नहीं देता।

एकमात्र संभावना और व्यवहार्यता यह है कि हम उन्हें इसके संरक्षण के लिए राजी कर सकें। मौजूदा 'कच्चे' तालाबों को समग्र रूप से चौड़ा और गहरा किया जा सकता है या बीच में 15-20 फुट गहरी खाई खोदी जा सकती है, जो पर्याप्त होगी और उद्देश्य को समान रूप से पूरा करेगी। नए तालाब सार्वजनिक भूमि पर भी खोदे जा सकते हैं। किसान खेतों में 'कच्ची खुई' (छोटे कुएं) खोद सकते हैं। मिट्टी की गुणवत्ता के आधार पर, केवल 3-4 फुट व्यास का और रेत शुरू होने पर

15-20 फुट गहरा 'कच्चा' कुआं अतिरिक्त पानी को सोखने, जच्च और जमा करने में चमत्कार कर सकता है।

यदि उचित देखभाल की जाए, तो 3-4 फुट व्यास वाले कुएं के मामले में मिट्टी



है। इसके विपरीत, पंजाब और कुछ अन्य क्षेत्रों में हर साल जल स्तर नीचे जा रहा है, जो गंभीर चिंता का विषय है। वास्तव में, बाढ़ ईश्वर का एक आनंदमय और छिपा हुआ उपहार है। हमें बुराई में से अच्छाई निकालनी है। बारिश का पानी अपने साथ बहुत सारे खनिज लाता है, जो भूमि को अधिक उपजाऊ बनाते हैं। हमें इसका उपयोग करने की आवश्यकता है। बाढ़ से भारी तबाही के बाद भी देश, राज्य और संबंधित क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को फायदा होता है। जल स्तर बढ़ता है। नील नदी इसका उदाहरण है।

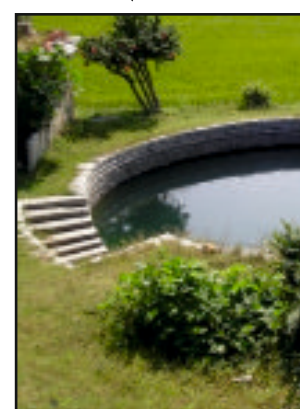
लोगों को कम पानी की खपत के लिए समझाना कठिन है, लेकिन अतिरिक्त पानी के संरक्षण के लिए समझाना तुलनात्मक रूप से आसान है। पंजाब के अधिकांश जिलों के लिए धान कभी भी उपयुक्त फसल नहीं थी। धान, यूकेलिप्टस (सफ़ेदा) और चिनार धरती से अत्याधिक पानी खींचते हैं। कुछ जागृत लोग पहले दिन से ही इन पेड़ों की खेती के खिलाफ थे, लेकिन लोग निहित स्वार्थ के लिए ऐसा करने से बाज

नहीं होगी। केवल 15-20 फुट की खुदाई के बाद, धरती भारी मात्रा में पानी सोख सकती है। हम लोगों को प्रोत्साहित करके और सरकार को इसके लिए जागृत करके आने वाली पीढ़ियों को जल संरक्षण का उपहार दे सकते हैं।

नहीं होगी। केवल 15-20 फुट की खुदाई के बाद, धरती भारी मात्रा में पानी सोख सकती है। हम लोगों को प्रोत्साहित करके और सरकार को इसके लिए जागृत करके आने वाली पीढ़ियों को जल संरक्षण का उपहार दे सकते हैं।

लोगों को कम पानी की खपत के लिए समझाना कठिन है, लेकिन अतिरिक्त पानी के संरक्षण के लिए समझाना तुलनात्मक रूप से आसान है। पंजाब के अधिकांश जिलों के लिए धान कभी भी उपयुक्त फसल नहीं थी। धान, यूकेलिप्टस (सफ़ेदा) और चिनार धरती से अत्याधिक पानी खींचते हैं। कुछ जागृत लोग पहले दिन से ही इन पेड़ों की खेती के खिलाफ थे, लेकिन लोग निहित स्वार्थ के लिए ऐसा करने से बाज

खिसकने की संभावना बहुत कम होती है। एकमात्र सावधानी यह बरतनी है कि समे किसी मवेशी या इंसान के गिरने से



बचने के लिए इसके गिर्द बाड़ लगा दी जाए। मिट्टी को पकड़ने के लिए किनारों और चार-दीवारी को ईंटों की केवल 2-3 कतारों की एक परत की आवश्यकता होती है। अधिक

से अधिक, समय के साथ कुएं को भर दिया जाएगा और दबा दिया जाएगा, लेकिन आस-पास की भूमि अधिक उपजाऊ हो जाएगी और तुलनात्मक रूप से नमी युक्त और तर बनी रहेगी। उस स्थिति में, हम एक नए कुएं के लिए जा सकते हैं। इस गतिविधि के लिए बहुत कम खर्च की आवश्यकता होती है। इसे केवल तीन लोग आधे दिन में ही खोद सकते हैं। मनरेगा के तहत श्रमिक को इस परियोजना में प्रतिनियुक्त किया जा सकता है।

किसान को शिक्षित, प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और सब्सिडी दी जानी चाहिए, जिसमें बहुत कम राशि शामिल हो। सरकार द्वारा नदियों को साफ करने के लिए बड़ी रकम वाली कई परियोजनाएं शुरू की गई हैं। इसके लिए सरकार को भी जगाया जा सकता है। मान लीजिए कि हम काफी समृद्ध हैं और हमारे पास ढेर सारा सोना, हीरे और हर कीमती व विलासितापूर्ण वस्तु है, लेकिन पीने के लिए पानी नहीं है, तो हमारे लिए सभी भौतिक चीजों का क्या मतलब होगा?

मैं कोई विशेषज्ञ नहीं, बल्कि एक जागरूक नागरिक हूँ। हो सकता है मेरी राय सही न हो, लेकिन आने वाली पीढ़ियों के व्यापक हित में और गिरते जल स्तर के वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए, बरसात और बाढ़ के पानी के संरक्षण

पर व्यापक काम करने की जरूरत है, जिसे अगर गंभीरता से नहीं लिया गया और ईमानदारी से हमारे सामयिक हित बारे में नहीं सोचा गया तो यह घातक साबित हो सकता है।

# बेर की मुख्य बीमारियां एवं उनके प्रबंधन

प्रीति वर्मा व विनोद कुमार मलिक,  
पौध रोग विभाग और ममता खेपड़, वानिकी विभाग,  
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार  
अनिल कुमार, कृषि विज्ञान केन्द्र, यमुनानगर

बेर भारत का बहुत ही प्राचीन एवं लोकप्रिय फल है। बेर शुष्क क्षेत्रों या बारानी परिस्थितियों में खेती के लिए उपयुक्त है। इसे इंडियन जुज्यूब और बारानी का बादशाह फल है। बेर एक एंटीऑक्सीडेंट फल है, परन्तु बेर में लगने वाली बीमारियां इसकी गुणवत्ता, पैदावार व उत्पादन पर प्रभाव डालते हैं। यदि किसान बेर में लगने वाली



भी कहा जाता है। बेर एक ऐसा फलदार पेड़ है, जोकि एक बार पूरक सिंचाई के स्थापित होने के पश्चात् वर्षा के पानी पर निर्भर रह कर भी फलोत्पादन कर सकता है। यह विटामिन सी व बी का अच्छा स्रोत है तथा इसमें कैल्शियम, लौह और शर्करा प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। सस्ता एवं लोकप्रिय फल होने के कारण इसे गरीबी का मेवा भी कहा जाता है।

बेर की खेती भारत में लगभग सभी राज्यों में भी होती है, परन्तु हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश व गुजरात में अपेक्षाकृत अधिक होती है। हरियाणा में पश्चिमी व दक्षिणी क्षेत्रों की जलवायु शुष्क व गर्म है, जो बेर के उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है।

बेर प्राकृतिक पौष्टिक तत्वों से भरपूर व खाने में मीठा स्वादिष्ट

बीमारियों को सही समय पर पहचान करके उसका प्रबंध कर लें, तो बीमारियों के नुकसान से बचा जा सकता है और उत्पादन को बढ़ा सकते हैं। बेर की मुख्य बीमारियां एवं उनके प्रबंधन निम्न प्रकार हैं :

**1. पाऊंडरी मिल्ड्यू :** यह बहुत ही घातक बीमारियों में से एक है। इसका प्रभाव अक्टूबर- नवम्बर में शुरू होता है। इससे बेर की फसल में काफी हानि होती है। इस बीमारी में मुख्य पहचान यह है कि इससे फलों व पत्तियों पर सफेद रंग के चूर्ण जैसी परत दिखाई देती है। शुरू में ये धब्बे छोटे होते हैं, जो बाद में पूरे फल पर फैल जाते हैं। इस बीमारी के कारण फलों की सतह खुरदरी व फलों का आकार छोटा रह जाता है, जिससे पैदावार में भारी गिरावट या कमी हो जाती है।

**प्रबंधन :** कैरोथियान 0.1 प्रतिशत (1.0 मिलीलीटर प्रति लीटर

“ बेर की खेती भारत में लगभग सभी राज्यों में भी होती है, परन्तु हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश व गुजरात में अपेक्षाकृत अधिक होती है। हरियाणा में पश्चिमी व दक्षिणी क्षेत्रों की जलवायु शुष्क व गर्म है, जो बेर के उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है। ”

पानी) नामक दवाई का पहला छिड़काव फूल निकलने से ठीक पहले तथा दूसरा छिड़काव जब फल मटर के दाने के बराबर हो जाएं, तब करें। यदि कैरोथियान उपलब्ध ना हो तो उसकी जगह सल्फैक्स 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) नामक दवाई का छिड़काव भी कर सकते हैं। सफल रोकथाम के लिए फलों का फफूंदनाशक घोल से तर हो जाना बहुत जरूरी है।

**2. आल्टरनेरिया झुलसा रोग :** इस बीमारी का प्रकोप ज्यादातर पत्तियों पर पाया जाता है। इस बीमारी में भूरे रंग के धब्बे पत्तियों की निचली सतह पर दिखाई देते हैं। कभी-कभी धब्बे पत्तियों की ऊपरी सतह पर भी दिखाई देते हैं। बीमारी वाले पत्ते सूख कर गिर जाते हैं।

**प्रबंधन :** इस बीमारी के समाधान के लिए 0.2 प्रतिशत (2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी) मैन्कोजेब (इण्डोफिल एम-45 या डाइथेन एम-45) नामक दवाई का घोल बना कर छिड़काव करें।

**3. सरकोस्पोश लीफ स्पॉट :** इस बीमारी का प्रकोप भी केवल पत्तियों पर ही दिखाई देता है। इसमें सबसे पहले पत्तियों पर छोटे-छोटे गोल आकार के धब्बे इसमें देने लगते हैं। धब्बे के बीच में से भूरे रंग के और किनारे पर लाल रंग के दिखाई देते हैं, जो बाद में बड़े होकर पत्तियों के दोनों तरफ दिखाई देने लगते हैं। इस बीमारी के अधिक प्रभाव से पत्तियां सूख

कर गिर जाती हैं।

**प्रबंधन :** इसके समाधान के लिए मैन्कोजेब 0.2 प्रतिशत (2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी) नामक दवाई के घोल का छिड़काव बीमारी के लक्षण दिखाई देते ही करें व दूसरा छिड़काव 15 दिन के अंतराल



में करें।

**4. रतुआ (लीट रस्त) :** इस बीमारी का प्रभाव पत्तियों पर पाया जाता है। इसमें पत्तियों की निचली सतह पर भूरे या नारंगी रंग के छोटे-छोटे कौल बन जाते हैं। इस बीमारी से प्रभावित पत्तों का रंग भूरा व गहरा भूरा हो जाता है।

**प्रबंधन :** इस बीमारी की रोकथाम के लिए 0.2 प्रतिशत

(2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी) मैन्कोजेब या डाइथेन एम-45 नामक दवाई का घोल बना कर छिड़काव करें।

**5. कजली रोग या काले धब्बों वाली बीमारी (सूटी मोल्ड) :** इस बीमारी का प्रभाव ज्यादातर पत्तियों पर दिखाई देता है तथा इस बीमारी के प्रभाव से पत्तियों की निचली सतह पर गहरे काले रंग के छोटे-छोटे धब्बे से दिखाई देने लगते हैं। अगर इस बीमारी का समय पर उपचार ना हो तो बीमारी वाली पत्तियों का रंग ऊपर से भूरे रंग का हो जाता है तथा बीमारी वाली पत्तियां सूख कर नीचे गिरने लगती हैं।

**प्रबंधन :** इस बीमारी के प्रबंधन हेतु कॉपर ऑक्सीक्लोराइड दवाई 0.3 प्रतिशत (3 ग्राम प्रति लीटर पानी) के हिसाब से घोल बना कर छिड़काव करें।

**6. फल गलन :** इस बीमारी में फल के निचले हिस्से में हल्के

भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं व बीमारी वाले धब्बों के ऊपर छोटे-छोटे काले रंग के दाने दिखाई देते हैं। यह बीमारी कई प्रकार के फफूंदों के कारण होती है।

**प्रबंधन :** इस बीमारी के उपचार के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड नामक दवाई 0.2 प्रतिशत (0.2 ग्राम प्रति लीटर पानी) के हिसाब से घोल बना कर छिड़काव करें।

## इस तरह उगाएं सब्जियां...

**टमाटर :** इसके लिए अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी होनी चाहिए। रेत, कोकोपीट और वर्मी कम्पोस्ट को मिला कर मिट्टी तैयार कर सकते हैं। टमाटर की फसल साल में तीन बार ले सकते हैं। घर पर टमाटर की पौध तैयार कर लें या किसी स्थानीय नर्सरी से पौधा ला कर लगा सकते हैं। पौधे में जब फल आने शुरू हो जाएं, तब कम मात्रा में पानी दें। बीच-बीच में ऑर्गेनिक खाद देते रहें। पौधे में जब फल आने शुरू हो जाएं, तब कम मात्रा में पानी दें। बीच-बीच में ऑर्गेनिक खाद देते रहें। पौधे में महीने में दो बार गोबर की खाद, सरसों की खली का तरल घोल दे सकते हैं। चूंकि टमाटर का पौधा मिलीबग और लीफमाइनर कीटों की चपेट में आ जाता है, इसलिए पौधों पर नीम के तेल का छिड़काव करें।

**हरी मिर्च :** अच्छे खाद मिश्रण में मिर्च का पौधा लगाने से यह अच्छी तरह से बढ़ता है। अच्छी जल निकासी ना होने के कारण इसके पौधों की जड़ें सड़ने लगती हैं। मिर्च के अधिक उत्पादन के लिए जैविक खाद जैसे कम्पोस्ट खाद, बोनमिल और गोबर खाद का उपयोग कर सकते हैं।

**लौकी :** लौकी के बीजों को मिट्टी में एक इंच गहराई में लगाएं। बीज बोने के बाद पानी दें। लौकी के पौधे 18 से 35 डिग्री तापमान में अच्छी तरह बढ़ते हैं। उगने में कम से कम 14 दिन लगते हैं। बीजों को कीड़ों से बचाने के लिए नियमित रूप से कीटनाशक का छिड़काव करते रहना बहुत जरूरी है।

कर मिश्रण तैयार करते हैं। फिर उसे गो बैग्स में भरते हैं। अगर रतीली दोमट मिट्टी मिल जाती है, तो उसमें रेत मिलाने की आवश्यकता नहीं होती है। अगर काली मिट्टी है, तब ही

उसमें रेत मिलाई जाती है। नीम की खली मिट्टी में मिलाने से यह उपजाऊ बनेगी और फंगस से भी बचाएगी। इसका उपयोग छह महीने में एक बार कर सकते हैं।



बरसात का लाभ लें और कुछ सब्जियां घर में ही उगा लें। बगिया सजीली बनेगी और भोजन में ताज़गी आएगी।

घर की ही हों सब्जियां

## बोते समय बरतें सावधानी

\* बीजों को अच्छी तरह से साफ कर लें।

\* मिट्टी का मिश्रण सही तरीके से तैयार कर लें। इसे भर कर फिर बीज बोएं।

\* बीज अंकुरित होने तक मिट्टी को नम बनाए रखें।

\* गमलों की मिट्टी में बीजों को एक साथ बहुत पास-पास नहीं लगाना चाहिए।

\* बीजों को अधिक गहराई पर न बोएं।

\* अधिक गीली मिट्टी में बीज नहीं बोने चाहिए।

## आर.एस. यादव, वरिष्ठ उद्यानिकी विशेषज्ञ

इस मौसम में सब्जियां महंगी हो जाती हैं। इससे सबक लेते हुए कुछ सब्जियां हमें घर पर ही उगा लेनी चाहिए। वर्षा ऋतु में कम तापमान और आर्द्र परिस्थितियों के कारण बीज अंकुरण प्रक्रिया और पौधों की वृद्धि तेजी से होती है। इसलिए घर की बगिया में सब्जियों को उगाना, आसान होता है। लेकिन इसके लिए पहले सही तरीका जान लें।

## गो बैग में उगाएं सब्जियां

घर में क्यारी नहीं है या कम

जगह है, तो गो बैग्स में सब्जियां उगा सकते हैं। गो बैग्स का वजन कम होता है और काफी लम्बे समय तक चलते हैं। इनमें अतिरिक्त जल निकासी भी अच्छी होती है। ये गमलों की अपेक्षा गहरे और बड़े होते हैं, सब्जियों के लिए 12x12, 15x12, 15x15 इंच के गो बैग्स उपयोग कर सकते हैं। इन्हें ऑनलाइन या बागवानी की दुकान से खरीद सकते हैं।

## मिट्टी ऐसी होनी चाहिए

सब्जियों की अच्छी बढ़वार के लिए 60 प्रतिशत मिट्टी और 20 प्रतिशत सड़ी हुई गोबर की खाद या वर्मी कम्पोस्ट और 20 प्रतिशत रेत मिला

मई में फेंकने पड़े, हिम्मत जुटाई और 12 एकड़ में फिर की खेती

# टमाटर से पुणे के किसान ने एक माह में कमाए 3 करोड़

टमाटर की बढ़ती कीमतों ने जहां आम आदमी की जेब पर बड़ा असर डाला है, वहीं महाराष्ट्र के पुणे के एक किसान के लिए यह बड़े लाभ का सौदा साबित हुआ है। पुणे के इस किसान ने तमाम चुनौतियों से पार पाते हुए पिछले एक माह में टमाटर बेचकर तीन करोड़ रुपये कमाए हैं। पुणे के पंचघर के किसान ईश्वर गायकर (36) को मई माह में कम दाम की वजह से बड़ी मात्रा में टमाटर फेंक दिए थे। इस झटके के बावजूद इस किसान ने अटूट दृढ़ संकल्प दिखाते हुए अपने 12 एकड़ के खेत पर टमाटर की खेती की।

गायकर का दावा है कि उन्होंने 11 जून से 18 जुलाई के बीच अपनी टमाटर की उपज बेच कर तीन करोड़ रुपये की कमाई की है। गायकर ने कहा, "नारायणगांव में कृषि उपज मंडी समिति (एपीएमसी) में तीन करोड़ रुपये में टमाटर के 18,000 क्रेट (प्रत्येक क्रेट में 20 किलोग्राम टमाटर) बेचे हैं।" उनका इरादा टमाटर के



4,000 शेष क्रेट बेचकर करीब 50 लाख रुपये की कमाई करने का है। गायकर ने बताया कि उन्होंने टमाटर की खेती और परिवहन पर कुल 40 लाख रुपये खर्च किए हैं। उन्होंने कहा, "मेरे पास 18 एकड़ के खेत हैं। इनमें से 12 एकड़ में मैंने टमाटर की खेती की।" गायकर ने 11 जून को 770 रुपये प्रति क्रेट (37 से 38 रुपये प्रति किलोग्राम) के भाव पर टमाटर बेचा। 18 जुलाई को उन्हें

प्रति क्रेट 2,200 रुपये (110 रुपये प्रति किलोग्राम) का भाव मिला। एक अन्य किसान राजू महाले ने भी चालू सीजन में टमाटर के ढाई हजार क्रेट बेचकर 20 लाख रुपये कमाये हैं। नारायणगांव कृषि उपज मंडी समिति के व्यापारी अक्षय सोलात ने कहा, "मैं पिछले 15 साल से इस कारोबार में हूँ। लेकिन टमाटर में इस तरह की तेजी पहले कभी देखने को नहीं मिली है।"

## सबसे खराब समय भी देखा है – गायकर

गायकर ने कहा, "यह टमाटर उत्पादकों के लिए सबसे अच्छा समय है, लेकिन हमने सबसे खराब समय भी देखा है। मई में मैंने उपज फेंक दी थी क्योंकि प्रति क्रेट दर सिर्फ 50 रुपये थी, यानी 2.50 रुपये प्रति किलोग्राम।"

गायकर ने बताया कि 2021 में उन्हें 15 लाख से 16 लाख रुपये का घाटा हुआ था और पिछले साल भी उन्होंने मामूली लाभ ही कमाया था।

## पंजाब के 18 जिलों में 2.37 लाख हैक्टेयर धान की फसल प्रभावित 12 फीसदी तक कम रह सकता है धान का उत्पादन

पंजाब में बाढ़ से 18 जिलों में 2 लाख 37 हजार 457 हैक्टेयर रकबे में धान की फसल प्रभावित हुई है। 1 लाख 5 हजार 749 हैक्टेयर में धान की दोबारा रोपाई होगी। इसके लिए किसानों को कम समय में पकने वाली धान व बासमती फसलों की किस्मों को ही लगाना होगा। कृषि विभाग ने प्रभावित किसानों को खुद धान की पनीरी मुहैया



करवाने की पहल की है। मोहाली में कंट्रोल रूम स्थापित किया है। पटियाला में 108600 हैक्टेयर में धान की फसल प्रभावित हुई है। दूसरे स्थान पर तरनतारन व फतेहगढ़ साहिब जिले हैं। मुक्तसर साहिब, बरनाला, बठिंडा, मालेरकोटला व मानसा में फसल ज्यादा प्रभावित नहीं हुई है। विभाग ने पनीरी मुहैया करवाने के लिए मोहाली में 77106-65725 हेल्पलाइन स्थापित की है। इस बार 3.84 लाख हैक्टेयर रकबा कम रहने पर 12 प्रतिशत (करीब 21 लाख टन) उत्पादन कम होने की उम्मीद है।

## फिरोज़पुर, फरीदकोट और बरनाला में प्रभावित किसानों के लिए मदद को बढ़े हाथ पनीरी की सेवा... प्रभावित किसानों को देगी राहत

पंजाब में बारिश से पैदा हुई प्राकृतिक आपदा से किसानों को करोड़ों-अरबों का जो नुकसान हुआ है, उसके मद्देनजर मददगार के रूप में कई सामाजिक संस्थाएं सामने आई हैं। वे धान की पनीरी तैयार कर प्रभावित किसानों में मुफ्त बांटेगी। अब ऐसी कई संस्थाओं की योजनाएं, जिन पर काम शुरू कर दिया गया है। ये धान की पनीरी तैयार करने के लिए बुवाई की है अथवा कर रही है, जिसे प्रभावित किसानों को खेती करने के लिए दिया जाएगा।

फिरोज़पुर में 10 हजार एकड़ से ज्यादा में धान की फसल बर्बाद है। ऐसे में दुल्चीके ग्राम पंचायत ने प्रस्ताव पारित कर 8 एकड़ जमीन में पनीरी के लिए बुवाई की। सरपंच अवतार सिंह ने कहा कि इस घड़ी में जितनी मदद की जाए, कम है। अभी

धान की पनीरी की बुवाई का समय है। 15 दिन बाद पनीरी तैयार हो पाएगी। 8 एकड़ की पनीरी से करीब 8 हजार एकड़ में रोपाई की जा सकेगी। मल्लांवाला में गुरमत प्रचार जत्थे के बाबा बलकार सिंह इलमें वाला ने बाबा बुद्धा जी लंगर कमेटी के सहयोग से 7 एकड़ में धान की पनीरी को जरूरतमंद किसानों को निःशुल्क उपलब्ध करवाएंगे। बाबा बलकार सिंह ने कहा कि अगर कोई और भी बाढ़ पीड़ितों के लिए पनीरी की सेवा में योगदान देना चाहता है, तो वह बीज दे सकता है। 7 एकड़ की पनीरी से करीब 7 हजार एकड़ में फसल की जा सकेगी। फरीदकोट में कोटकपुरा की कीटनाशक, बीज व खाद विक्रेता यूनियन ने संधवा, ढाब गुरु की बरगाड़ी, पक्का, हरिवाला, जीवन वाला, चहल सिवियां व दिल्लीवां

गांव के किसानों को धान का बीज निःशुल्क उपलब्ध करवा खेतों में बुवाई करवाई है, ताकि पनीरी तैयार हो सके। यूनियन के कोटकपुरा अध्यक्ष राजन गर्ग ने बताया कि कृषि विभाग के मुख्य जिला कृषि अधिकारी डॉ. करणजीत सिंह गिल व कोटकपुरा के कृषि विकास अधिकारी डॉ. नवप्रित सिंह की प्रेरणा से संधवा गांव में एक एकड़ में बुवाई के लिए करीब 25 क्विंटल बीज किसानों को उपलब्ध करवाया गया है, जिसकी पनीरी करीब 20 दिन में रोपाई के लिए तैयार होगी। बरनाला में एस.जी.पी.सी. की अंतरिम कमेटी के सदस्य परमजीत सिंह खालसा की अगुवाई में एस.जी.पी.सी. की जमीन पर 10 एकड़ में धान की पनीरी के लिए बुवाई की गई। जब पनीरी तैयार होगी, तो उसे बाढ़ प्रभावित इलाकों में पहुंचाया जाएगा।

## भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 95वें स्थापना एवं तकनीकी दिवस के अवसर पर गुरुग्राम के कृषक हुए शामिल

कृषि अनुप्रयोग तकनीकी अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के दिशा-निर्देशन में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के गुरुग्राम के शिकोहपुर स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र की अध्यक्ष डॉ. अनामिका शर्मा

महिला कृषकों ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 95 स्थापना एवं तकनीकी दिवस समारोह में क्रियाशीलतापूर्वक भाग लिया।

केन्द्र के कृषि वैज्ञानिक डॉ. भरत सिंह ने जानकारी दी कि आई.

के विभिन्न गांवों के कृषकों ने कृषि विज्ञान केन्द्र, गुरुग्राम व नास कॉम्प्लैक्स, आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली में आयोजित स्थापना दिवस समारोह तथा विभिन्न कृषि तकनीकी तकनीकों की प्रदर्शनी का भ्रमण कर जानकारी ली।

डॉ. भरत सिंह व डॉ. कविता बिष्ट समस्त कृषकों व कृषक महिलाओं के समूहों को इस अवसर पर भ्रमण करवा कर कृषि तकनीकों के प्रति जागरूक किया। साथ ही कृषकों को अनेकों प्रतिष्ठित कृषि वैज्ञानिकों से मिलने का मौका मिला। जिसमें विशेषकर अटारी जोधपुर के निदेशक डॉ. जे.पी. मिश्रा, आई.ए. आर.आई., पूसा के निदेशक डॉ. ए.के. सिंह, एन.सी.आई.पी.एम. निदेशक डॉ. सुभाष चंद्र, डॉ. एस. पी. सिंह ने निमेटोलौजी संभाग की



प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अर्चना सिंह ने कृषकों का कृषि क्षेत्र में ज्ञान वर्धन किया। प्रदर्शनियों के माध्यम से पौष्टिक

अनाजों की खेती तथा इन अनाजों से तैयार उत्पादों के प्रति दर्शकों ने विशेष रुचि दिखाई।



की देख-रेख में गुरुग्राम के ग्रामीण क्षेत्र के 300 से अधिक पुरुष व

सी.ए.आर. के 95वें स्थापना व तकनीकी दिवस के अवसर पर गुरुग्राम



PROFESSIONAL  
**DETAILERS**

**HIGH-END  
DETAILING  
STUDIO**

To Preserve Your Car From  
Scratches | Uv Ray's | Bird Dropping | Nail Marks  
Swirl Marks | Colour Fading



**Services Offered**

**Ceramic Coating | Graphene Coating | PPF**



@PROFESSIONAL\_DETAILERS

UPTO  
**7**  
YEARS  
WARRANTY

**MOHALI : E-2, Industrial Area Phase-2, Sector 57-A Mob. : 98786-00180**

**PATIALA : Opposite Commando Complex, Rajpura Road Mob. : 98153-00180**



देश की राजधानी समेत उत्तर भारत के अनेक राज्यों में जबरदस्त बारिश से बुरा हाल है। कई इलाके जलमग्न हो गए। हिमाचल प्रदेश में ब्यास नदी में उफान से कई पुल टूट गए, मकान ढह गए, तो गाड़ियां बह गईं। दिल्ली में भी बरसात ने कई साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया। मौनसून की शुरूआत में ही उत्तर भारत में इतनी बारिश क्यों हो रही है? क्या ये सामान्य बात है या किसी गड़बड़ी का

## आसमान से आफत क्यों बरसी

संकेत, इसे गहराई से समझना पड़ेगा। वैसे मौनसून में तेज बारिश आना कोई बहुत असामान्य चीज नहीं है। अगर हम इतिहास के नज़रिए से देखें तो बहुत ज्यादा बारिश होना और बहुत कम समय में, ये मौनसून

में ट्रेंड रहा है, लेकिन अभी जो हो रहा है, वो थोड़ा असाधारण है। पहली बात ये है कि मौनसून इस बार लैट से आया। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने जो भविष्यवाणी की थी देर से की, उससे काफी देर से आया है मौनसून।

उसके बाद जून के पहले

20 दिन में मौनसून साधारण

रहा है। कुछ-कुछ देश

के कुछ-कुछ इलाकों में,

जैसे कि वैस्टर्न इंडिया और

सदर्न इंडिया ने मौनसून

की कमी केवल 60 फीसदी

थी। उसके बाद मौनसून

इतनी तेजी से आया।

आजकल देख रहे हैं बारिश

जितनी तेजी से हो रही

है, अब मौनसून ज़रूरत

से ज्यादा होने की बात

की जा रही है। मौनसून

की देरी के बाद अधिक

बरसात और फिर अचानक

बरसात का बढ़ना, ये दिखा

रहा है कि मौनसून में जो

तबदीलियां आ रही हैं,

उसको ये बहुत ही स्पष्ट

दिखा रही हैं। पिछले 8

दिन में जो कमी आंकी

जा रही थी, वो अतिरिक्त

हो जाना, इसका मतलब

कि बहुत तेजी से बारिश

होना। पिछले कुछ सालों

में जो असाधारणता दिखाई

दे रही है मौनसून में, अब

वो बहुत-बहुत स्पष्ट नज़र

आ रहा है। दरअसल ये

जो हम बेमौसम बरसात,

गर्मी के समय ठंड हो

जाना, ठंड के मौसम का

टलते जाना या देर से आना,

बारिश में सूखा होना वगैरह

देख रहे हैं, ये सब ग्लोबल

वार्मिंग और क्लाइमेट चेंज

के लक्षण हैं। पूरे देश में

कई जगह जहां बहुत कम

वर्षा होती थी या नहीं

होती थी, खूब बारिश हो

रही है। हिमालय के क्षेत्र में खासकर बद्रीनाथ, केदारनाथ और हिमाचल प्रदेश के कई हिस्सों में उम्मीद से अधिक जो बर्फबारी दिख रही है, वह तो सीधे तौर पर जलवायु परिवर्तन की वजह से हो रही है।

इसकी मुख्य वजह यह है कि हम लोग जो ज़मीन का उपयोग यानी लैंड यूज, लैंड कवर चेंज हमने बदल

होगी न। इसका मतलब ये है कि हमें 33 फीसदी ज़मीन पर वन रखना ही चाहिए और खेती का इलाका जो है, वह 40 फीसदी से अधिक होना ही नहीं चाहिए। जब तक ये इकोलॉजिकल बैलेंस नहीं करेंगे, तब तक चैन नहीं मिलेगा। आधिकारिक तौर पर, सरकारी तौर पर, जब तक हम ज़मीन का उपयोग रेखांकित नहीं करेंगे, तब तक समस्या बढ़ती जाएगी और आने वाले समय में तो ये विकराल रूप धारण करता जाएगा।

अभी जो लोग 40-45 की उम्र में हैं, उन्होंने अपनी किशोरावस्था में



दिया है। हिमालय क्षेत्र में जो नदियों का वाटरशेड एरिया है, वो हम लोगों ने अपने जीवनयापन के लिए नष्ट कर दिया है। इसका सीधा असर वहां के मूल निवासियों पर पड़ रहा है। जो लोग पर्यटन के उद्देश्य से वहां जा रहे हैं, उनके ऊपर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा है। यह जलवायु परिवर्तन लैंड यूज, लैंड कवर में बदलाव की वजह से हो रहा है। वन्य क्षेत्र घट गया, नदियों का सिकुड़ना जारी है और वर्षा जल का हम संरक्षण कर नहीं रहे। हमें तो प्रकृति की हिस्सेदारी वापस बहाल करनी

सुना होगा कि जलवायु परिवर्तन का प्रभाव 21वीं शताब्दी के अंत तक दिखेगा, लेकिन वह तो अभी ही दिख रहा है, 21वीं सदी की शुरूआत में ही हो गया है। हमारा क्लाइमेट चेंज हो रहा है, धरती का तापमान जो औसत 15 डिग्री है, वह 1.5 डिग्री बढ़ चुका है। हालांकि, अगर रीजनल स्तर पर हम देखें तो कई जगह 8 से 10 डिग्री तक बढ़ गया है। इसके पीछे मानव का अतिक्रमण ही एकमात्र कारण है।

अशोक भाटिया

**ताबा-जी का वादा इस साल धान की फसल होगी ज्यादा**

**Kan Biosys**  
THE MICROBIAL COMPANY

**INDIA MADE GLOBALLY ADMIRRED**  
**TABA-G**  
Zinc Solubilizing Bacteria  
Bio-fertilizer (carrier based) for soil application

ताबा-जी  
उच्च-नी  
ताबा-जी

• Enhances nutrient uptake  
• Soil Health

Granules • Stimulates beneficial microbial activity in rhizosphere

High Yield	Non Toxic	Residue Free
Increases crop yield by 10-15% in paddy, wheat, maize, etc.	Safe for humans, animals, and the environment.	No chemical residues in the soil or crops.

• Kan Biosys Pvt. Ltd.  
• 100% Bio-based  
• 100% Environmentally friendly

**डोज - 4 किलो/एकड़**

**ताबा-जी**

• फायदे •

- ▶ जिक की निरंतर उपलब्धता।
- ▶ जड़ों का अच्छा विकास।
- ▶ उत्कृष्ट हरियाली निर्माण।
- ▶ आकार, गुणवत्ता और पैदावार में सुधार।
- ▶ खाद की शक्ति में बढ़ोत्तरी।

**उपयोग**

बेसल डोज और प्रत्यारोपण के 10 दिनों बाद पहला छिटा लगाइए और 30 दिनों बाद दुसरा छिटा लगाइए

**ग्राहक सेवा संपर्क - +91 8484006196, + 91 8484006806**

